ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

भारतीय किसान आन्दोलन में चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी की भूमिका

गौरव तोमर
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग एस0 डी0 (पी0 जी0) कॉलेज गाजियाबाद, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ

डा. जय कुमार सरोहा
एसोसिएट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग एस0 डी0 (पी0 जी0) कॉलेज गाजियाबाद, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ

सारांश

इस शोध पत्र को लिखने का मेरा उद्देश्य भारत में हुए किसान आन्दोलन का उल्लेख करना है साथ ही उन किसान आंदोलनों का उल्लेख करना विशेष रहा है जिनमें विभिन्न किसान नेताओ ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है परन्तु इस शोध पत्र मे विशेष रूप से किसान आंदोलनो में चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी की भूमिका का वर्णन व विश्लेषण किया गया है इस शोध पत्र को चार भागों में विभजित किया गया है। प्रथम भाग में किसानों की स्थिति का वर्णन है द्वितीय भाग में चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी के जीवन संघर्ष का उल्लेख है तृतीय भाग में किसान आंदोलन में चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी की भूमिका का वर्णन और चतुर्थ भाग में निष्कर्ष दिया गया है।

मुख्य शब्दः किसान, अर्थव्यवस्था, सैनिक, किसान आंदोलन, कर, लगान, खाप पंचायत

परिचय

इस शोध पत्र मे चूकि किसान आंदोलन का जिक्र किया जा रहा है इसलिए सबसे पहले किसान की भूमिका के बारे मे उल्लेख किया है। भारत मे किसानों को एक ऊँचा दर्जा दिया गया भारत में किसानों को सैनिको के बराबर समझा जाता है क्योकि जिस प्रकार सैनिक भारत की सीमा पर रहकर आतंकवादि गतिविधियों से देश की आन्तिरिक और बाहय सुरक्षा करते है उसी प्रकार किसान भी खेती व उत्पादन करके भारत की अर्थव्यवस्था में योगदान देते है। इसलिए ''जय जवान जय

किसान'' का नारा भी इसी उद्देश्य से दिया गया था कि किसान ओर आगे बढ़ सकें। लेकिन किसानों के लिए यह समस्याएं रही है कि इनको अपनी मांगे मनवाने के लिए बार–बार धरने प्रदर्शन ओर आंदोलन करने पड़ते है। यह धरना प्रदर्शन

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

ओर आंदोलन का इतिहास आज का नही है अगर हम ब्रिटेन शासन की दौरान की बात करें तो यह अतिश्योक्ति नही होगी कि तब कि सरकार भी किसानों कें खिलाफ ऐसे नीतिया बनाती थी कि किसानों को मजबूरन आंदोलन करनें पड़ते थें।

ब्रिटिश शासन के दौरान जबरन नील की खेती करने के लिए बाध्य किया गया साथ ही किसानों पर लगान की सीमा में बढोत्तरी की गई जिससे किसानों को अपनी उपज का आधे से ज्यादा हिस्सा ब्रिटिश सरकार को लगान के रूप में देना पड़ता था। अंग्रेजी सरकार ने किसानों पर इतना कर लगा दिया था कि किसान अपनी बहु बेटियों को बेचने के लिए बाध्य हो गया था।

अंग्रेजी शासन काल के दौरान किसानों व कृषि से संबंधित ऐसे नीतिया बनाई जाती थी कि उस समय का किसान भी गुलामी की जिन्दगी जिने के लिए विवश हो गया था। अंग्रेजी सरकार की इन नीतियो व कानूनों से परेशान होकर उस समय के किसान नें अंग्रेजी शासन के विरूध आंदोलन का बिगुल फूंक दिया था क्योकि किसान इतना मजबूर हो गया था कि उसको अपना जीवन गुलाम की तरह जीना पड़ता था या अपना जीवन त्यागना पड़ता था इस अंग्रेजी शासन के खिलाफ जो आंदोलन किये गये उनमें कुछ आंदोलन शानदार तरिके से सफल भी हुए अब अगर वर्तमान समय की बात करे तो आज भी विभिन्न कारणों के आधार पर सरकार के विरूध किसान नीतियों व कानूनों को लेकर आंदोलन होते रहे है ओर अगर हम उत्तर प्रदेश की बात करे तो यहां किसान आंदोलन में विभिन्न किसान नेताओं ने अपना विशेष योगदान दिया है लेकिन इन किसान आंदोलनो में यदि किसी किसान नेता का सबसे बड़ा नाम आता है तो वो चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी का है इसलिए जरूरी हो जाता है कि चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी के जीवन संघर्ष का इतिहास जाना जाए।

चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी का जीवन संघर्ष

भारतीय किसान यूनियन के अध्यक्ष चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी का जन्म 15 अगस्त 1935 को मुजफ्फरनगर जनपद के शाहपुर ब्लॉक के गाँव सिसौली में स्वर्गीय चौधरी चौहल सिंह एवं स्वर्गीय श्रीमती मुखतारी जी के परिवार में हुआ था।

इनके पूर्वजों ने राजकुमार राज विजराव जी ने हरियाणा से आकर सन् 1150 ई0 में उत्तर प्रदेश में एक शिवपुरी गाँव बसाया था। यही गाँव को अब सिसौली के नाम से जाना जाता है। तब से ही सिसौली गाँव बालियान खाप के 84 गाँव के चौधरियो का निवास स्थान बन गया था।

1940 की बात है उस समय उनके पिता चौधरी चौहल सिंह जी की आर्थिक स्थिति बहुत देनिय हो चुकी थी, तब वह अपने परिवार के साथ पास के एक गाँव हरसौली में जा बसे। किसी बात को लेकर बालियान खाप की एक पंचायत हुई जिसमें कहा गया कि चौहल सिंह पद सम्भालने मे अक्षम है इसलिए यह पद हरसौली गाँव के किसी जाट को दे दिया जाय, लेकिन पंचायत के इस फैसले से हरसौली गाँव वाले सहमत नही हुए। फिर 10 जनवरी 1945 को बालियान खाप की एक पंचायत में पंचायत के सदस्यों ने चौधरी जी की मद्द का प्रस्ताव पास किया जिससें चौधरी जी के परिवार को बालियान खाप द्वारा इक्ट्ठी की गई धन राशि से 40 बीघे जमीन खरीदकर दी गई थी।

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी को उनके पिता चौहल सिंह जी की मृत्यु के उपरान्त वर्ष 1943 में 8 वर्ष की अल्प आयु में बालियान खाप के चौधरी पद से सुशोभित किया गया। चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी की शिक्षा 7वी कक्षा तक ही हो पायी थी चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी के परिवार में चार पुत्र क्रमशः नरेश कुमार, राकेश कुमार, नरेन्द्र कुमार एवं सुरेन्द्र कुमार है इनके अतिरिक्त तीन पुत्रियाँ तथा एक भाई भोपाल सिँह जी भी है।

चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी आंदोलनों की व्यवस्थाओं एवं जिम्मेदारियों के बावजूद भी अपने परिवार की जीविकोपार्जन के लिए व्यवसाय के तौर पर खेती पर ही निर्भर थे और इस व्यवसाय से वह खुद को गौरवान्वित महसूस करते थे। चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी की वैशभूषा आम किसानों जैसी ही थी। राजा हर्षवर्धन ने बालियान खाप के चौधरियो की बहादूरी एवं वफादारी से प्रभावित होकर बालियान खाप के चौधरियो को अपने दायें हाथ से रक्त का टिका किया था, तभी से खाप के चौधरियो को टिकैत कहने की परम्परा चली आ रही है।

चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी का नाम 1986 से पहले ज्यादा नही जाना जाता था लेकिन कुछ वर्षो के दौरान जिस प्रकार किसानों के हित व अधिकारों को लेकर प्रदेश, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाई गई वह काबिले तारिफ थी और इस आवाज को इतने ऊँचे स्तर पर उठाने वाले कोई और नही स्वयं चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी ही थे। जिसके परिणाम स्वरूप ''अमेरिकन बायोग्राफिकल इन्सटीटयूट रैलीज'' द्वारा चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी का 'हू इज हू' मैन ऑफ द ईयर 2003 के लिए चुना गया था।

चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी का एक बहुआयामी व्यक्तित्व था, जिनका स्वार्थ और प्रलोभन से दूर तक कोई नाता नही था। चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी का अपने जीवन का एक ही लक्ष्य व संकल्प था कि किसानों को हरहाल में सम्मान मिल सकें, उन्हें शोषण मुक्त किया जा सके और साथ ही उनकी समस्याओं की और ध्यान दिया जा सके व उन समस्याओं का निवारण किया जा सकें। चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी ने किसान आंदोलनों मे एक लम्बे संघर्ष के बाद इन आंदोलनों को एक नई गति और दिशा प्रदान की।

चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी लम्बे समय से बीमारी से जूझ रहे थे जिसके कारण 15 मई 2011 को इस महान व्यक्ति का निधन हो गया।

किसान आन्दोलन मे टिकैत जी की भूमिका

भारत में ब्रिटिश शासन से लेकर आज तक समय–समय पर सरकार द्वारा कृषि नीतिया व कानून बनायें गयें है जिनसे किसान सहमत और असहमत भी होते है। जब किसान इन नीतियों और कानूनों से असहमत होते है तो किसान सरकार के विरूध धरना प्रदर्शन व आन्दोलन करते है इन किसान आन्दोलनों की शुरूआत ब्रिटिश शासन काल से अंग्रेजी सरकार द्वारा भू–राजस्व की मात्रा बढाने से हुई थी इस तरह तब से लेकर आज तक समय–समय पर विभिन्न किसान आंदोलन हुए है जिनमें चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी के योगदान का वर्णन व विश्लेषण इस प्रकार है।

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

करमू खेडी आंदोलन

अगस्त 1986 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बिजली की दरें साढ़े बारह रूपये प्रति हार्स पावर से बढ़ाकर 30 रूपये प्रति हार्स पावर कर दी थी जिसके विरोध में चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी के नेतृत्व में करमू खेड़ी बिजली घर पर 27 जनवरी 1987 को धरना प्रदर्शन किया गया परन्तु उत्तर प्रदेश सरकार व सरकारी अधिकारियों ने किसानों के इस धरने पर व उनकी मांगों पर कोई ध्यान नही दिया जिसके कारण चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी ने एक मासिक पंचायत की जो सिसौली मे हुई और इस पंचायत में निर्णय लिया गया कि 1 मार्च को करमू खेड़ी बिजली घर पर बड़ी संख्या मे पहुँच कर बड़ा प्रदर्शन किया जायेगा।

जिला प्रशासन और सरकार ने इस आन्दोलन को रोकने का निश्चय किया और 1 मार्च को बिजली घर पर जाते हुए किसानों को रोकने के लिए प्रशासन ने पुलिस को गोली चलाने की आज्ञा दे दी जिससें पुलिस ने गोली चला दी, जिसमें लिसाढ़ गाँव के जयपाल सिंह व सिमालका गाँव के अकबर अली शहीद हुए थे। इस गोली काण्ड के विरोध में प्रतिकियास्वरूप पी.एस.सी. के एक जवान की भी मौत हो गयी थी। लेकिन चौधरी सीताराम बहावड़ी व चौधरी हरिकिशन के नेतृत्व मे हजारों किसानों में धरना स्थल पर पहुँच कर सरकार के इस प्रयास को नाकाम कर दिया था।

इस धरने के बाद से चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी ने पूरी तरह किसान यूनियन की कमान अपने हाथों में ले ली थी। चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी के नेतृत्व में 1 अप्रैल 1987 को शामली मे एक एतिहासिक रैली का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 3 लाख किसानों ने भाग लिया। इस रैली को सम्बोधित करने का कार्य शेतकारी संगठन के नेता शरद जोशी, बंधुआ मजदूर मुक्ति मोर्चा के नेता स्वामी अग्निवेश ने किया। यह रैली अत्यंत शानदार तरीके से सफल हो जायेगी इसकी आशंका सरकार को हो गयी थी जिसके कारण रैली से पहले ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री वीर बहादूर सिंह जी ने बिजली की दरो में 5 रू0 प्रति हार्स पावर कम करने की घोषणा कर दी थी।

इस अप्रत्याशित जीत के बाद से अब हर माह की 17 तारीख को चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी की महापंचायत होनी शुरू हो गयी थी। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी की मृत्यु पर नई दिल्ली मे किसान घाट बनवाने में चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी ने अहम भूमिका निभायी थी।

इस धरने के बाद से चा चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी ने देश में इसी दौर में लगभग 300 किसान पंचायतों को सम्बोधित किया। चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी का भारी स्वागत होने लगा और लोग उनके समर्थक व अनुयायी बनने लगे। इनका समर्थन इतना होने लगा था कि अब सरकारी अधिकारी व कर्मचारी भी इनके डर से किसानों का शोषण करना बन्द कर दिये थे। गाँवों के विवादों को गाँवो की पंचायतो द्वारा सुलझाया जाने लगा और साथ ही शाराब की दुकाने भी बन्द होने लगी और साथ ही गाँव की जनता यह भी समझने लगी कि एकता मे ही शक्ति है यदि हम एकत्र होकर रहेंगे तो कोई हमारा शोषण नही कर पाएगे और हम अपने अधिकारों के लिए सरकार से लड़ पाएगे।

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

मेरठ कमिश्नरी घेराव।

17 फरवरी 1988 को मेरठ में कमिश्नरी ऑफिस के सामने लोगो का एक बड़ा जनसैलाव वहां जा पहुँचा। जनवरी से मेरठ कमिश्नरी पर अनिश्चितकालीन घेराव करने का ऐलान कर दिया। इस घोषणा के बाद मेरठ के कमिश्नर व डी0आई0जी0 ने किसानों को धमकी दी कि किसानों को मेरठ में घुसने नहीं दिया जायेगा और साथ ही प्रशासन ने चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी को गिरफ्तार कर रासुका में जेल भेजने की योजना बनाई।

मेरठ में किसानों के जन सैलाब को रोकने के लिए सरकार ने 20 से अधिक पी0ए0सी0 की षहर मेरठ तथा मुजफ्फरनगर में फ्लैग मार्च निकालकर किसानों को डराने का प्रयास किया था। लेकिन फिर भी किसानों पर इस फ्लैग मार्च का कोई असर नहीं हुआ और लाखों की तादाद में किसान बैखोफ इकट्ठा होकर सी0डी0ए0 मैदान और कमिश्नरी पर जा खडें हुये। जिससें प्रशासन किसानों के इस जन सैलाब की षक्ति को बेबस ओर मूक होकर देखता रहा।

25 दिनों तक यह धरना किसानों के हितों के लिए सरकार से लड़ता रहा यह भी जनशक्ति का एक अद्भुत प्रदर्शन था। यह आंदोलन इतना बड़ा होगा और चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी का ऐसा शक्ति प्रदर्शन होगा इसका अंदाजा तो मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह भी नही लगा पाये थे। बाद मे जब मेरठ का यह आंदोलन खत्म हुआ तो चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी ने असहयोग आंदोलन चलाने की घोषण कर दी थी जिसमें लगान न देना, किसी भी सरकारी अफसर व कर्मचारी को गाँव मे न घुसने देना और बिजली का बिल न देना शामिल था।

वोट क्लव धरना

मेरठ धरना खत्म होने के बाद चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी के नेतृत्व मे 25 अक्टूबर 1988 को नई दिल्ली में वोट क्लव पर धरना दिया गया था। लगभग 10 लाख गाँव के लोग वासी वोट क्लव पर आकर इक्ट्ठा हो गये जिससे पूरी दिल्ली में किसान और उनकी हरी टोपियां ही दिखाई दे रही थी। इस बड़े जन सैलाब को देखकर पूरी दिल्ली और तमाम नेता हैरान हो गये थे। यह आंदोलन गावँ और शहरों के बीच बढ़ती खाई व गाँव के किसानों के साथ सरकार का क्रूरता व दासता वाला व्यहवार था। ये तीन आंदोलन इतने विशाल थें कि इन आंदोलनो से चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी की भूमिका निखरकर आयी व साथ ही किसानों में भी जागरूकता बढ़ी।

वोट क्लव के बाद चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी ने उत्तर प्रदेश सरकार के खिलाफ नईमा काण्ड व किसानों की मांगो को लेकर 3 अगस्त 1989 को भोपा गंगनहर पर आंदोलन का बिगुल बजा दिया। इस धरने में सरकार को झुकना पड़ा और पहली बार चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी और उत्तर प्रदेश सरकार के बीच लिखित समझौता हुआ।

रजबपुर सत्याग्रह

जब मेरठ में कमिश्नरी ऑफिस का घेराव किया गया था तो इस आन्दोलन में मुरादाबाद के किसानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा था। भाकियू के वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चौधरी विजयपाल सिंह जी के नेतृत्व में लगभग 60 हजार किसानों ने इस आन्दोलन में

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

जोश के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया था। इस क्षेत्र के किसान सरकार द्वारा किये गये किसानों के साथ अन्याय ओर किसानों की मांगें न माने जाने पर अत्यन्त रूष्ठ थे जिसके फलस्वरूप चौधरी विजयपाल सिंह जी के नेतृत्व में किसानों ने 16 फरवरी 1988 को रजबपुर में सड़क मार्ग व रेल मार्ग को पूर्णतय अवरूद्ध कर दिया था। पुलिस ने सरकार के आदेशानुसार सड़क मार्ग ओर रेलमार्ग को खुलवाने के लिए बल प्रयोग किया और साथ ही गोली का भी इस्तेमाल किया था।

इस गोली कांड में 5 किसान षहीद हुए थे ओर सैकड़ों की तादाद में घायल भी हुए थे। इस गोली कांड ने इतना उग्र रूप ले लिया था जिसके कारण किसानों ओर पुलिस के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी।

भाकियू के 50 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने रजबपुर पहुॅचकर हालात का जायजा लिया और किस प्रकार पुलिस ने किसानों पर अत्याचार किया इसके बारे में सम्पूर्ण जानकारी जुटाकर इन सदस्यों ने एक रिपोर्ट बनायी ओर चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी को सौपी। चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी ने इस रिपोर्ट के बाद 1 मार्च 1988 को रजबपुर में षहीद दिवस मनाने का ऐलान कर दिया। साथ ही मुरादाबाद के किसानों पर पुलिस द्वारा किये गये अत्याचार का दुख प्रकट किया ओर पुलिस की इस बर्बर कार्यवाही की कठोर षब्दों में भर्त्सना की थी साथ ही 6 मार्च से जेल भरो आन्दोलन चलाने ओर सरकार से आर–पार की लड़ाई करने की घोषणा कर दी। इस दौरान भाकियू के नेता कैप्टन भोपाल सिंह, फिरोजुद्दीन रठौड़ा, हरपाल सिंह, सुल्तान सिंह, बिजादका पर रासुका लगा दी गयी जिसके बाद स्वामी वरूणवेष एवं स्वामी ओमवेष के नेतृत्व में सन्यासियों के जत्थे ने 19 मार्च को अपनी गिफ्तारी दे दी।

उत्तर प्रदेश में उप चुनाव होने थे इसलिए सरकार चाहती थी कि किसी तरह भाकियू नेताओं से समझौता हो जाये इसलिए उत्तर प्रदेश सरकार ने भाकियू नेताओं को आमन्त्रित किया जिससे उनके आमन्त्रण पर केन्द्रीय मंत्री बूटा जी के आवास पर दिल्ली में भाकियू व प्रदेश के मंत्रियों के बीच वार्तालाप हुई जिससे इस वार्तालाप ने भाकियू की सात मांगों का मान लिया गया था जिसके बाद इस आन्दोलन की समाप्ति हो गयी थी।

इस प्रकार चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी का किसान आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है उन्होनें समय–समय पर किसानों के लिए उनके हितों व अधिकारों व सम्मान के लिए धरना प्रदर्शन व आंदोलन किये है।

निष्कर्ष

किसान आंदोलन अपने आप में एक राष्ट्रवादी विचारधारा को लेकर समय–समय पर देश में होतें रहें है इन आंदोलनों में चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत जी ने विशेष योगदान दिया है। ऐसे बहुत आंदोलन हुए है जिनमें लोगों को अपनी जाने भी गवानी पड़ी ये आंदोलन कर, लगान में बढ़ोत्तरी जैसी व्यवस्था के कारण हुए है। जिनसे किसानों का शोषण हुआ है और किसानों को गुलामी की जिन्दगी जीनी पड़ी। अन्त मे मै यही कहना चाहूँगा कि सरकार समाजिक व व्यक्तिगत कल्याण को ध्यान मे रखकर ही नीतियाँ बनाए जिससे देश का किसान मजबूर होकर सड़को

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

पर रहने के लिए व आंदोलन करने के लिए मजबूर न हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अजय कुमार और सुदेश द्विवेदी, एक चमत्कारी किसान नेता लेख माया अक्टूबर द्वितीय पक्ष 1987
2. दरयाव सिंह, राष्ट्रकोषाध्यक्ष भारतीय किसान यूनियन से साक्षात्कार के आधार पर साक्षात्कार 21–11–2008 शुक्रवार को सम्पन्न
3. अशोक बालियान (2003), किसान आंदोलन में चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत की भूमिका, कुसुम प्रकाशन, मुजफ्फरनगर
4. अर्चना सिंह 2006, पश्चिमी उत्तर प्रदेश ग्रामीण विकास में किसान आंदोलन की भूमिका
5. इन्द्र सिंह रावत, किसान यूनियन के 6 वर्ष, सर्जन प्रेस मुजफ्फरनगर
6. अरूण नेहरू, 1990 किसानों का मसीहा टिकैत एक लेख, दैनिक जागरण